''ख़ुदा तुम लोगों की ज़िन्दगी आसान करना चाहता है।''

(सूर–ए–निसा)

इस्लाम में शादी के ऊँचे मक़सद

हुज्जतुल इस्लाम प्रो0 हुसैन अन्सारियान
अनुवादक : मु0 र0 आबिद

(पिछले शुमारे से आगे)

घर और घरवालों के लिए जतन

शादी करने, बियाहता ज़िन्दगी बिताने और बच्चों के कामों पर ध्यान देने से आदमी पर दुनिया के सकारात्मक (Positive) असर पड़ते हैं। इसके अलावा आध्यात्मिकता भी अपनी जगह बनाती है। बीवी बच्चों के खर्चे पूरे करना इस्लाम की नज़र से ख़ुदा के लिए बड़ी से बड़ी इबादत है। मासूम (अ0) से यहाँ तक मिलता है: ''जो आदमी अपने बीवी बच्चों के लिए जतन करता है वह ख़ुदा के रास्ते में जिहाद करने वाला जैसा है।''

इसमें कोई शक नहीं कि बीवी बच्चों के हक़ (उनके प्रति कर्तव्यों को) पूरे करना और उनकी आध्यात्मिक कामों को अहमियत देना और मियाँ–बीवी का एक–दूसरे के हक़ पूरे करना बहुत कठिन काम है। पर यह ख़ुदा के हुक्म पर चलने का नाम है। उनकी दुनियाई ज़रूरतों को पूरा करना भी इबादत है और आख़िरत में अच्छा बदला, पुण्य और सवाब की वजह है। घर और घरवालों को बुराई और बिगाड़ से अलग रखना, बीवी बच्चों की बाढ़ उठान और पालने पोसने के लिए जतन करना बहुत बड़ा काम है और ख़ुदा की बेहतरीन इबादत है। बच्चों को पालकर नेक बनाकर समाज के हवाले करना ख़ुदा की ख़ुशी की वजह है।

इमाम ज़ैनुल आबिदीन (अ0) फरमाते हैं: ''जो आदगी भी अपनी बच्चों को पूरी तरह दुनियाई और रूहानी भोजन देता है दूसरों से ज़्यादा ख़ुदा के क़रीब होता है।''

हर हाल में समाज घर से ही बनता है। वकील, वज़ीर, राष्ट्रपति और मज़दूर भी घर से ही जुड़े होते हैं। उनके पालने वाले वही होते हैं जिनके हाथों में घर की बागडोर होती है। घर की मिसाल एक ज़मीन जैसी है। अगर ज़मीन सिचाई से दूर है तो वह बन्जर है जिसमे फल फूल नहीं उगते। अगर ज़मीन सिचाई और अपनी असलियत से मिली हुई है तो फल–फूल की उम्मीद करना अक़्ल की बात होगी।

पहले चरण या पड़ाव में अच्छाई और बुराई, शगुन अपशगुन, माँ–बाप की तरफ से ही इन्सान में आते हैं। मगर माँ–बाप औलाद की अच्छाई के लिए जतन करेंगे तो इसकी गिनती बड़ी इबादत में होगी और वे शादी के हमेशा रहने वाले फायदों को पायेंगे। अगर वे उनकी बुराई और निकम्मेपन के कारण बनते हैं तो मानो उन्होंने शादी के पाक पौधे से कोई फल नहीं लिया और अपने को तबाही के गड्ढे में झोंक दिया। इसीलिए रसूल (स0) की एक हदीस है:

''बुरे भागों वाला माँ के पेट से ही ऐसा पैदा होता है और शुभ–शगुन, अच्छी क़िसमत वाला माँ के पेट से ही ऐसा पैदा होता है।''[1]

शादी का मक़सद उँचा होना चाहिए

आदमी को चाहिए कि पाक मतलब और रूहानी मक़सद से शादी करें, जीवन साथी की भलाई और बच्चों को रूहानी पालन पोषण के लिए शादी करे। मर्द औरत, ख़ुद को एक बड़ी इबादत के लिए तैयार करना चाहिए। उन्हें ख़ुदा की खुशी के लिए शादी करना चाहिए। उन्हें यह मालूम होना चाहिए कि वे बच्चों के जन्म देने के मामले में ख़ुदा की एक अमानत के रखने वाले हैं। जनाबे सैय्यदा के पैदा होने से ठीक पहले ख़ुदा ने रसूल (स0) को 40 रोज़े रखने का हुक्म दिया था। चालीसवें दिन जन्नत के मेवे से अफ़्तार किया तभी जनाबे सैय्यदा माँ के पेट में आईं।

शादी के सिलसिले में आखों पर भरोसा न कीजिए। सेक्स के लिए ही शादी न करे। माल, पैसा, ऊपरी दिखावे की शान, कुर्सी के पद पाने के लिए शादी नहीं होनी चाहिए। इसका मक़सद ख़ूबसूरती और दिखावे वाली चीज़ें न होना चाहिए क्योंकि इन का फल अच्छा नहीं निकलता। इससे बहुत कम फ़ायदा होता है। शादी का असली मक़सद ख़ुदा की ख़ुशी, इबादत, रूहानियत, जीवन साथी के हक़ (दायित्व) का लिहाज़ करना और नेक बच्चों को पालना होना चाहिए। इससे शादी के फ़ायदे हमेशा रहने वाले हो जाते हैं। हलाल और जायज़ मज़े उठाने को आसमानी और ऊँचे मक़सद के आधीन (नीचे) कर देना चाहिए ताकि सही मज़ा उठा सकें और सवाब पा सकें। ख़ुदा की ख़ुशी को ध्यान में रखकर शादी होगी तो तलाक़ की नौबत न आएगी। ख़ुदाई रिश्ता और जोड़ हमेशा वाला होता है। जो ख़ुदा के लिए शादी करता है वह अपने जीवन साथी को ज़रा भी दुख नहीं पहुँचाता और उसके हक़ (दायित्वों) को पूरी तरह निभाता है। मुसलमान मियाँ–बीवी को चाहिए कि हज़रत अली (अ0) और जनाबे सैय्यदा की शादी को अपने लिए नमूना बनायें। यह शादी ख़ुदा की ख़ुशी के लिए हुई इसमें ख़ुदाई वाले मक़सद ही सामने थे; इसके फल भी नेक पाक हुए। शिया रिवायतों से यह शादी इन आयतों की तावील (माने मतलब निकालना) है:

''कभी दो नदियाँ मिलती हैं इन दोनों के बीच उसी ने दो नदियाँ बहायीं जो आपस में मिल जाती हैं। उनके बीच आड़ है जिससे वे पार बढ़ती नहीं (एक दूसरे की सीमा में नहीं जाती)।. .... इन दोनों से मोती और मूँगे निकलते हैं।

(सूर–ए–रहमान, आयत–19, 20, 22)

मोती मूँगो से मुराद (संज्ञा) इमामे हसन व हुसैन (अ0) हैं।

अगर शादी में अनचाही रस्मों, शैतानी बातों यानि जिहालत की तहज़ीब (संस्कृति) से अलगाव न होगा (जिन बातों का रसूल (स0) ने ख़त्म करने का हुक्म दिया था) तो बुराइयाँ फैल जायेंगी और इसका फल कड़वा होगा।

(जारी)

1– इसका मतलब यह न निकालना चाहिए कि ख़ुदा पहले से ही भाग्य बना देता है या बिगाड़ देता है। इसके सीधे माने हैं वे अच्छाई या बुराई जो Heriditary या Genetic (जन्म–जात) होती है वह माँ के पेट से ही मिल जाती है। उनमें भी अपने कर्म से सुधार या निखार (या बिगाड़) ही किया जा सकता है। मु0 र0 आबिद